Introduction

विषय प्रवेश :: -

१ - विषय का स्पष्टीकरण --

सन् ६० तक आते आते हिन्दी कविता का मिज़ाज कुछ बदलने लगता है। जो नयी कविता क्षणकानी मानवीयता के खोखले स्वांग, बौद्धिकता के छूछे प्रयास, नव रहस्यवाद और उल्टे सीधे शिल्पगत प्रयोगों से होकर गुज़र रही थी वह निश्चय ही नयी नहीं रही थी। युवा कवियों का एक वर्ग महसूस करने लगा था कि मौजूदा नयी कविता समकालीन यथार्थ की ईमानदार अभिव्यक्ति नहीं कर पा रही है। जैसा कि डॉ० परमानन्द श्रीवास्तव ने संकेत किया है कि सन् ६० -- "यह विशेष समय नयी काव्य संभावनाओं के आरंभ से अधिक नयी कविता के अन्त का सूचक है।"[१] इसके विपरीत अजित कुमार जैसे कवि आलोचक इस बात को गले नहीं उतार पा रहे हैं कि प्रवृत्ति, शैली, शिल्प, वाद या आन्दोलन किसी भी रूप में नयी कविता समाप्त होगई है या अपना कार्य पूरा कर चुकी है। उन्हीं के शब्दों में "मैं समझता हूं कि नवीनतम अर्थात् पिछले कुछ वर्षों की कविता कोई नयी शुरुआत नहीं, बल्कि पूर्ववर्ती कविता का ही -- उसी की दिशा और प्रवृत्ति में विकास है।"[२] डॉ० जगदीश गुप्त भी सातवें दशक की हिन्दी कविता का आधार नयी कविता को ही मानते हैं। दरअसल सातवें दशक की हिन्दी कविता छठे दशक की नयी कविता से 'वस्तु' और 'शिल्प' दोनों ही दृष्टियों से भिन्न है। समकालीन भाव-बोध से सम्पन्न सातवें दशक की कविता को किसी अन्य उपयुक्त संज्ञा के अभाव में साठ के बाद की कविता या साठोत्तरी कविता कहकर सम्बोधित किया जाता है।

---

(१) नयी कविता का परिप्रेक्ष्य - भूमिका

(२) कविता का जीवित संसार - पृष्ठ- ५१

यदि सन् ६० और ७० के बीच लिखी गयी हिन्दी कविता की पड़ताल की जाय तो स्पष्ट होगा कि इस कालावधि में युवा कवियों के साथ-साथ बिचली पीढ़ी और पुरानी पीढ़ी के रचनाकार भी काव्य सर्जना में संलग्न थे। सुमित्रा नन्दनपन्त, बच्चन, दिनकर आदि से लेकर अज्ञेय, भारती, गिरिजाकुमार माथुर आदि नये कवियों के अतिरिक्त धूमिल, कमलेश, लीलाधर जगूड़ी जैसे युवा कवि ६० से ७० के बीच सक्रिय रहे हैं। तब यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि क्या सन् ६० के बाद लिखी गई हर प्रकार की कविता साठोत्तरी कविता कही जा सकती है अथवा साठोत्तरी कविता से आशय एक खास किस्म की कविता से है। पन्त, बच्चन यहाँ तक कि अज्ञेय और माथुर आदि कवियों का भाव-बोध 'आधुनिक' कम है 'रोमांटिक' अधिक है। इनकी कविता वास्तविक अद्यतनिक बोध और यथार्थ अनुभव की कविता नहीं कही जा सकती, इसके विपरीत १९६० ई० के बाद युवा कवियों की हिन्दी कविता में आधुनिक जीवन की विसंगति और अर्थ-हीनता की तीखी प्रतिक्रिया मिलती है। ६० के पहले की कविता में समकालीन परिवेश के प्रति तटस्थता और जीवन के प्रति एक ठंडापन सा मिलता है जब कि इसके विपरीत युवा कवियों द्वारा लिखी गई कविताओं के तेवर गुस्सैल हैं। 'इधर की बहुत सी रचनाओं में आधुनिक मध्यमवर्गीय शहरी संस्कृति की संवेदना, समकालीन विसंगति बोध, वर्तमान विसंगतियों पर जो व्यंग्य, वैज्ञानिक चेतना, मूल्य मूढ़ता और इनके साथ यंत्रणामयी विवशता, अस्तित्व संकट की अनुभूति, संशय, मृत्युबोध, आत्म हत्या, आत्म निषेध, भय, तनाव, अकेलेपन और विषाद के स्वर हैं।'[१] युवा कवियों की इस विशिष्ट भावबोध से सम्पन्न रचनाएँ ही साठोत्तरी कविता का प्रतिनिधित्व कर सकती हैं।

साठोत्तरी हिन्दी कविता से आशय युवा कवियों द्वारा रचित

---

(१) चिन्तन - डॉ० प्रेमप्रकाश गौतम - पृष्ठ - १२१

उस खास किस्म की परम्परायुक्त हिन्दी कविता से है जो स
लिखी गई है। और जो है 'वस्तु' और 'शिल्प' की दृष्टि से
काव्यान्दोलनों--छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नयी व
सर्वथा भिन्न है। डॉ० परमानन्द श्रीवास्तव के अनुसार सन्
की कविता `- - - - - -उस कविता के बाद की कविता है
६० के बीच सूक्ष्म मानसिक एवं रागात्मक स्थितियों के उद्देश्य
बा रही थी।'[१] साठोत्तरी कविता में नवगीत को भी शामि
जा सकता क्यों कि शिवास की ऊपरी तबदीलियों के बावजू
मिजाज भी रोमान्टिक ही है। केदारसिंह ने अपने एक निब
किया था कि सन् ६० के बाद कविता का विकास दो दिशा
१- कविता से अकविता की ओर
२- शुद्ध कविता से एक खास किस्म की प्रतिबद्ध कविता की ओ
इस प्रकार साठोत्तरी कविता का मूल्यांकन करते समय एक ओ
वादियों की रचनाओं का अध्ययन अपेक्षित है तो दूसरी ओ
ओर प्रतिबद्ध कवियों की कविता से गुजरना आवश्यक है।
में साठोत्तरी कविता के अन्तर्गत एक ओर मुक्तिबोध, रघुवीर
धूमिल, लीलाधर जगूड़ी, वेणुगोपाल, कुमार विकल, रमेशगौ
आदि प्रगतिशील युवा कवियों की रचनाओं को लिया गया
जगदीश चतुर्वेदी, गंगाप्रसाद विमल, श्यामपरमार, सौमित्र म
अकवियों की कविताएँ भी इसमें सम्मिलित हैं। प्रगतिशील
साथ अकविता सम्प्रदाय के कवियों पर आपत्ति की गुंजाइश है
अकविता अस्वीकार और विद्रोह की कविता है। यह बात
यह विद्रोह गलत गलियों में भटका हुआ है। इस शोध प्रबन्

---

(१) नयी कविता का परिप्रेक्ष्य -
(२) धर्मयुग ४ जुलाई, १९६५- लेख--`सन् ६० के बाद की

उन्हीं रचनाओं को लिया गया है जो आलोच्य काल के परिवेश को निकट से देखती हैं और अस्वीकार, विरोध, आक्रोश और विद्रोह की विभिन्न मुद्राओं में समकालीन यथार्थ को 'जेनुइन' तरीके से आंकती है। कुछ ऐसी रचनाओं को भी इस शोध प्रबन्ध के दायरे में समेटा गया है जो नयी कविता के प्रतिष्ठित हस्ताक्षरों से युक्त हैं। ऐसा करने के पीछे यह भावना निहित है कि पुरानी पीढ़ी की जिन रचनाओं में साठोत्तरी भाव-बोध उभरा है उन्हें साठोत्तरी कविता के अन्तर्गत लेने में कोई झिझक नहीं होनी चाहिए। यही कारण है कि युवा कवियों के साथ सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, शमशेर बहादुरसिंह, भवानी प्रसाद मिश्र, भारत भूषण अग्रवाल आदि की कविताओं पर भी विचार किया गया है।

प्रस्तुत प्रबन्ध में १९६० और १९७२ के दौरान प्रकाशित रचनाओं को ही आधार बनाया गया है। इसमें कुछ ऐसे काव्य संकलनों का उल्लेख भी है जिनका प्रकाशन १९७२ के बाद हुआ है लेकिन इनकी उन्हीं रचनाओं का मूल्यांकन किया गया है जो १९७२ से पूर्व लिखी जा चुकी थीं या पत्र - पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी थीं।

प्रस्तुत प्रबन्ध में साठोत्तरी कविता के सम्पूर्ण अध्ययन की दृष्टि से 'वस्तु' और 'शिल्प' पर एक साथ विचार किया गया है। वास्तव में 'वस्तु' और 'शिल्प' एक दूसरे के साथ बहुत घनिष्ट हैं इनमें से किसी एक का अध्ययन दूसरे की अनुपस्थिति में अपूर्ण और अप्रामाणिक होता है। अत: साठोत्तरी कविता की उपलब्धियों और सीमाओं से अवगत होने के लिए यह अनावश्यक नहीं था कि इसके 'वस्तु' और 'शिल्प' को एक साथ देखा जाय। 'वस्तु' के अन्तर्गत एक ओर कवियों के अनुभवों की पड़ताल की गई है दूसरी ओर उन अनुभवों के आधार पर निर्मित जीवन दृष्टि की शक्ति और प्रासंगिकता को तौला गया है। 'शिल्प' के अन्तर्गत भाषा, प्रतीक, बिम्ब, फैंटेसी आदि का अध्ययन आवश्यक समझा गया है।

(२) विषय की नवीनता और महत्व::-

साठोत्तरी कविता के सभी आयामों को लेकर लिखा गया सम्भवत: यह सर्व प्रथम शोध प्रबन्ध है। साठोत्तरी कविता या युवा कविता को लेकर छुट-पुट चर्चा बहुत हुई है। एक दो छोटी-मोटी पुस्तकें भी समकालीन कविता शीर्षक से देखने को मिलती हैं। 'फिलहाल' (अशोक वाजपेयी), 'पुनश्च' (हरिचरण शर्मा), 'नयी कविता के बाद' (डॉ० ओमप्रकाश अवस्थी), 'समसामयिक हिन्दी कविता: विविध परिदृश्य' (डॉ० गोविन्द रजनीश), 'चिन्तन' (डॉ० प्रेमप्रकाश गौतम), 'नया काव्य नये मूल्य' (ललित शुक्ल) आदि कृतियों में युवा कविता को समझने - बूझने की अच्छी कोशिश मिलती है लेकिन शोध के स्तर पर कोई कार्य अद्यावधि देखने में नहीं आया है। इस प्रकार विषय की दृष्टि से इस प्रबन्ध की मौलिकता स्वयं सिद्ध है। इस शोध कार्य से न केवल सातवें दशक की हिन्दी कविता का स्वरूप स्पष्ट होता है अपितु उसकी उपलब्धियाँ और सीमाएँ भी सामने आती हैं। यह भी स्पष्ट हुए बिना नहीं रहता कि साठोत्तरी कविता की दिशा किधर है, मानव जीवन से जुड़ने की ओर अथवा पलायन की ओर। इस शोध का अर्थ कार्य की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि यह है कि पिछली पीढ़ी और नयी पीढ़ी की कविता के बीच का अन्तराल बड़ा स्पष्ट हो उठता है। आज की कविता नयी कविता से कितनी दूर चली आई है और उसमें कौन से आयाम नवीनता लेकर आ जुड़े हैं इसका प्रबन्ध में इन महत्वपूर्ण प्रश्नों का भी यथा स्थान उत्तर ढूँढा गया है। इस प्रकार आधुनिक हिन्दी कविता के एक महत्वपूर्ण युग को समझने की दृष्टि से यह शोध प्रबन्ध सर्वथा मौलिक और नवीन है।